

# ग्रीन बिल्डिंग से पर्यावरण बचाने की कोशिश

## मनीष वैद्य

तथाकथित विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरणीय हितों की लंबे समय से अनदेखी हुई है। दुर्भाग्य से हमारे यहां निर्माण को ही विकास का पर्याय मान लिया गया और यही वजह है कि पर्यावरण लगातार हाशिए पर रहा। विकास की इस अवधारणा और प्राथमिकताओं ने बीते कुछ सालों में ही हमारे सामने जो पर्यावरणीय संकट खड़े किए हैं, वे हमारे जीवन और सेहत के लिए ही भारी पड़ने लगे हैं। हम साफ हवा और पानी तक को मोहताज हो गए हैं। अब पर्यावरण बचाने और प्रदूषण के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए हरित भवन (ग्रीन बिल्डिंग) पर जोर दिया जा रहा है। इसमें बिजली-पानी का कम से कम खर्च तथा वातानुकूलित होने से भी इसका चलन तेज़ी से बढ़ रहा है।

इको फ्रेंडली ग्रीन बिल्डिंग यानी हरित भवन खास तौर पर पर्यावरण को ही ध्यान में रखकर बनाए जाते हैं। निर्माण प्रक्रिया से प्रकृति और पर्यावरण के नुकसान को कम करने की दिशा में सबसे कारगर साबित हो रही है ग्रीन बिल्डिंग अवधारणा। और आने वाले भविष्य के लिए यह सबसे ज़रूरी कदम भी है। ये हमारे पर्यावरण या पारिस्थितिकी तंत्र को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। ये ऊर्जा के बेतहाशा क्षय को भी रोकते हैं, कचरा निस्तारण और प्राकृतिक आपदाओं से बचने के भी उपाय होंगे ऐसे मकानों में। करीब 10 डिग्री तक तापमान को भी कम कर सकेंगे।

इनमें ऊर्जा और पानी बचाने पर जोर होता है। इनके आसपास बड़ी संख्या में पेड़-पौधे लगाए जाते हैं ताकि तापमान को नियंत्रित किया जा सके। इनमें पेड़-पौधों के लिए भी पर्याप्त जगह रखी जाती है, साथ ही बालकनी, खिड़की, गैलरी, छत और ओपन टेरेस में भी गमलों के ज़रिए छोटे-छोटे पौधे लगाने का प्रावधान किया गया है।

हमारे देश में हरियाली को करीब 30 से 35 फीसदी तक बढ़ाने की ज़रूरत है, जबकि सिंगापुर जैसी छोटी जगह पर हरियाली 49 फीसदी तक है। इनमें प्रकृति और पर्यावरण

के नज़रिए से यह खास तौर पर ध्यान रखा जाता है कि यहां रहने वाले लोगों को उजाले और साफ हवा के लिए बिजली और अन्य संसाधनों का इस्तेमाल कम से कम करना पड़े। इनका तापमान भी ठंडा बना रहता है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन सब फायदों के बाद भी इनकी लागत सामान्य मकानों की कीमत के मुकाबले महज़ तीन फीसदी ही ज़्यादा होगी यानी अंतर बहुत कम है।

ग्रीन अवधारणा के मकानों में पर्यावरण को बिना नुकसान पहुंचाए अधिक से अधिक प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल किया जाता है। जैसे सूरज का उजाला मकान के अधिकांश हिस्से को रोशन कर सके ताकि बिजली की खपत कम हो। रात में जहां ज़रूरी हो वहां भी कितने वॉट का बल्ब या ट्यूबलाइट की ज़रूरत है तथा जहां ज़रूरी न हो वहां खपत कम हो, इसका भी ध्यान रखा जाता है। इसी तरह खिड़कियां आदि ऐसी क्रास वेंटिलेशन की बनाई जाती है कि लगातार हवा मिलती रहे। ऐसे मकानों में प्राकृतिक हवा के प्रवेश और निकासी के लिए जतन किए जाते हैं, ताकि पंखे, कूलर और एसी चलाए बिना भी आसानी से प्राकृतिक हवा हर जगह मिलती रहे। गर्मियों में बिना किसी संसाधन के मकान को ठंडा रखने की तकनीक भी इनमें होती है। फ्लाइ ऐश की टाइल्स अपेक्षाकृत ठंडी होती हैं और गर्मियों में जब गर्म हवा और धूप की वजह से मकान की बाहरी दीवारें काफी गर्म हो जाती हैं, तो ऐसे में भी फ्लाइ ऐश अंदर की सतह को ठंडा बनाए रखती है। इसके अलावा भूजल स्तर बढ़ाने के लिए इनमें प्राकृतिक रीचार्ज तथा सीवरेज की अत्याधुनिक तकनीकों का भी उपयोग किया जाता है। इनके निर्माण में भूकंपरोधी तकनीकों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। इन तमाम वजहों से यह खासा लोकप्रिय हो रहा है।

इनमें पानी की बचत पर सबसे ज़्यादा ध्यान दिया गया है। इनमें बरसाती पानी को ज़मीन में सहेजने और वॉटर रिचार्जिंग के साथ पानी के पुनः उपयोग पर भी जोर दिया

गया है। सीवरेज ट्रीटमेंट कर दैनिक उपयोग के लिए इस्तेमाल पानी को रिसायकिल किया जा सकेगा। इस तरह के प्रोजेक्ट में बिजली की बचत के लिए सौर उर्जा का उपयोग करने के लिए सोलर प्लेट भी लगाई जा रही हैं।

ग्रीन बिल्डिंग अवधारणा भारत जैसे देशों के लिए नई हो सकती है लेकिन विदेशों में इसका चलन करीब 20 साल पहले ही शुरू हो चुका है। हमारे देश में भी अब इसकी तरफ लोगों और खासकर बिल्डर्स का ध्यान गया है। देश के अलग-अलग शहरों में करीब तीन हज़ार से ज़्यादा ग्रीन बिल्डिंग प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। बीते पांच सालों में ही बैंगलुरु, हैदराबाद, पंचकूला तथा चंडीगढ़ के साथ इंदौर और भोपाल जैसे शहरों में भी इसे लेकर लोगों की उत्सुकता बढ़ी है। इसके लिए बाकायदा इंडियन ग्रीन बिल्डिंग कौंसिल अलग-अलग शहरों में जाकर बिल्डर्स और लोगों को इसके फायदे गिना रही है।

पंचकूला के आईटी पार्क में बीते साल ऐसी ही एक ग्रीन बिल्डिंग बनकर तैयार हो चुकी है। इसमें डबल ग्लास पैनल, फ्लाई ऐश स्लेब तथा सोलर पैनल के साथ सभी बारीकियों का ध्यान रखा गया है। यहां काम करने वालों को इसमें काम करना बेहद रास आ रहा है। यह ऊर्जा संरक्षण का भी नायाब नमूना है। यहां कई प्रोजेक्ट पर भी काम चल रहा है।

इन दिनों बड़े शहरों के बिल्डर्स इन ग्रीन बिल्डिंग के फायदे अपने ग्राहकों को बताकर उन्हें इसके लिए प्रेरित भी कर रहे हैं। यह पर्यावरण, बिल्डर्स और ग्राहकों तीनों के लिए फायदे का सौदा साबित हो रहा है। इसका चलन बड़े महानगरों और अन्य बड़े शहरों में तेज़ी से बढ़ रहा है। इनमें से कई प्रोजेक्ट तो बनकर तैयार भी हो चुके हैं। सरकार भी इसे बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। कुछ बड़ी सरकारी बिल्डिंग को भी ग्रीन बिल्डिंग ही बनाया जा रहा है। 2025 तक इसका दायरा और बढ़ाने के लिए विभिन्न शहरों में इसके लिए कांफ्रेंस की जा रही हैं, तो आर्किटेक्चर के विद्यार्थियों को भी इसके फायदे बताए जा रहे हैं।

हालांकि कुछ बिल्डर्स अपने प्रोजेक्ट में सिर्फ ग्रीन शब्द जोड़कर ही अपने ग्राहकों को धोखा दे रहे हैं। ऐसे में

ग्राहकों को इसके मायने गंभीरता से समझने की ज़रूरत है और जागरूक होने की भी। इसके लिए इंडियन ग्रीन बिल्डिंग कौंसिल ने बकायदा रजिस्ट्रेशन और रेटिंग जैसी व्यवस्था भी लागू की है। हमने अब तक पर्यावरण को जिस निर्ममता से बर्बाद किया है, उसे सुधारने की दिशा में ग्रीन बिल्डिंग एक ज़रूरी कदम साबित हो सकता है।

हमारे यहां एक तरफ जहां हरियाली और बरसात तेज़ी से घट रहे हैं, वहीं हवा भी लगातार ज़हरीली होती जा रही है। बीते दिनों कुछ शहरों में वायु और जल प्रदूषण के जो भयावह आंकड़े हमारे सामने आए हैं, उनसे साफ है कि अब सिर्फ बातों से हालात सुधरने वाले नहीं हैं। अब नए सिरे से इस पर एक्शन की ज़रूरत है। हमारे यहां कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन बड़ी मात्रा में हो रहा है। हमने शहरों में सीमेंट-कांक्रीट के बड़े-बड़े जंगल तो खड़े कर लिए पर हम अपने जीवन के लिए सबसे ज़रूरी पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुंचाते रहे। हम पेड़ों को लगातार काटते रहे पर कभी एक पौधे को पेड़ बनाने के बारे में नहीं सोचा। हमने अपनी नदियां गंदी कर दी पर कभी इन्हें साफ-सुथरा बनाने का नहीं सोचा। हमने बरसात का पानी व्यर्थ ही बह जाने दिया पर कभी उसे सहेजने की दिशा में कोई पहल नहीं की। हमें नलों से पानी क्या मिलने लगा हमने अपने प्राकृतिक कुएं-कुण्डियां ही बिसरा दीं, उन्हें कूड़ादान में तबदील कर दिया। इतना ही नहीं हमने अपने सांस लेने के लिए सबसे ज़रूरी हवा को भी कभी साफ बनाए रखने पर सोचा नहीं और न कोई कदम उठाया। यही वजह है कि शहर अब लोगों के रहने लायक नहीं बचे। उनमें न पर्याप्त पानी है और न ही साफ-सुथरी ताज़ी हवा। गर्मियों में तो शहरों के कई मकान भट्टी की तरह तपते हैं। ऐसी स्थिति में ज़रूरी है कि हम इस नई पहल का स्वागत करें और इसे मकान तक ही सीमित नहीं रहने दें बल्कि इससे एक कदम आगे बढ़कर हमारे आसपास भी ऐसे जतन करें जिससे हमारे पर्यावरण को साफ-सुथरा और रहने लायक बनाए रखा जा सके। अब भी समय है कि बचे हुए प्राकृतिक संसाधनों को सहेजें और इनके मनमाने दोहन पर पाबंदी लगाएं। (स्रोत फीचर्स)